रमेश यादव

ई-मेल-rameshyadav0910@yahoo.com

फूल बड़े अच्छे होते हैं, हमें हँसना सिखाते हैं

"बाबूजी..., माताजी....,मैं मुस्कान ! फूल ले लो ना, फूल....! ताजे—ताजे फूल....। फूल बड़े अच्छे होते हैं, हमें हँसना सिखाते हैं। इन्हें गुलदान में सजाइए और घर को तरो-ताजा पाइए...। ले लो ना अम्मा, इन फूलों के सहारे ही मेरा गुजरा होता है और मैं स्कूल भी जाती हूँ।"

मंदिर से लौटते हुए जैसे ही मिस्टर एण्ड मिसेस राजपूत चौराहे पर पहुँचे, उस नौ-दस साल की बच्ची की आवाज ने उन्हें मुड़कर पीछे देखने को मजबूर कर दिया। फूलों का गुलदस्ता लिए वह आत्मविश्वास भरी आवाज के साथ उनके पीछे—पीछे भागी आ रही थी। बिना कुछ बोले श्रीमती राजपूत ने दो गुलदस्ते खरीद लिए।

"बाबूजी, माताजी थॅंक्यू...! आप लोग भी मेरी तरह बहुत उदास और दुखी हैं ना ! आपका बेटा भी अब इस दुनिया में नहीं रहा ना...! मैं जानती हूँ, अखबार में आप लोगों की तस्वीर के साथ मैंने यह खबर पढ़ी थी। उस बड़ी-सी हवेली में रहते हैं ना आप लोग...! बाबूजी, शहर में जब दंगे हुए थे ना, तो दंगाईयों ने हमारा भी घर जला दिया था और उस हादसे में मेरे अब्बा और अम्मा की जान चली गई। मैं स्कूल गई थी, इसलिए बच गई। रोने -तड़फने या मातम मनाने से पेट तो नहीं भरता ना...! जो सहायता राशि मिली थी उसी के सहारे फूल बेचने का काम करने लगी। पड़ोस वाली आंटी के साथ रहती हूँ। सबेरे स्कूल भी जाती हूँ। माताजी फूल हमें जीना सिखाते हैं, हँसना सिखाते हैं आप लोग भी हँसिए ना ! क्या आप लोगों का दुख मेरे दुख से बड़ा है....?"

वे दोनों पहले एक दूसरे को, फिर उन फूलों को देखते हैं! इकलौते बेटे वीरेन्द्र की हत्या के बाद वे बेहद ही उदास, शुष्क और निर्जीव जिंदगी जीने पर मजबूर हो गए थे। उनके कानों में आवाज गूँजने लगती है—'माताजी फूल हमें जीना सिखाते हैं, हँसना सिखाते हैं आप लोग भी हँसिए ना! क्या आप लोगों का दुख मेरे दुख से बड़ा है....?"

हल्का—सा मुस्कुराते हुए वे दोनों उसकी पीठ थपथपाते हैं। आगे बढ़कर मिसेस राजपूत उसे चूमते हुए बोलीं, "बेटी, तुम बड़ी हिम्मती और प्यारी हो। भीख माँगने की बजाय मेहनत करके पेट भर रही हो और स्कूल भी जाती हो, यह बड़ी बात है। सब ठीक हो जाएगा, ऊपर वाले पर भरोसा रखो। और हाँ, कल से घर आकर रोज हमें फूल दे जाना।" इतना कहकर वे दोनों घर की ओर बढ़ गये।